भारत-ताइवान बनाएंगे सेमीकंडक्टर, खत्म होगी चीन पर निर्भरता

तैयारी...ई-वाहन और 5जी सेवाओं में होगा इस्तेमाल, 50 फीसदी खर्च उठाएगी सरकार

नई दिल्ली। सेमीकंडक्टर की कमी से जूझ रहे वाहन सहित अन्य उद्योगों को राहत देने के साथ देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार ताइवान के साथ मिलकर काम करेगी। दोनों देश 55.37 हजार करोड़ रुपये की लागत से सेमीकंडक्टर विनिर्माण इकाई लगाने की तैयारी में हैं। इस कदम से चीन पर निर्भरता पूरी तरह खत्म हो जाएगी।

ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत और ताइवान के अधिकारियों ने पिछले सप्ताह इस योजना पर मंथन किया और दोनों देश सेमीकंडक्टर निर्माण में चीन के दबदबे को कम करने पर सहमत हुए। भारत इसका इस्तेमाल ई-वाहन, लैपटॉप, मोबाइल और 5जी सहित कई क्षेत्रों में करेगा। मामले से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि साल के आखिर तक विनिर्माण इकाई लगाने की योजना है। भारत इस पर आने वाले 55.37 हजार करोड़ में से 50% खर्चा उठाने को तैयार है। इसके अलावा सेमीकंडक्टर विनिर्माण के लिए कच्चे माल पर आयात शुल्क में छूट भी दी जाएगी। ब्यूरो

55.37 हजार करोड़ रुपये से स्थापित होगी विनिर्माण इकाई

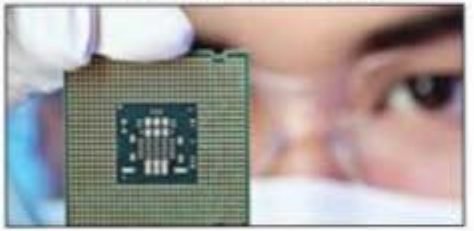

■ चीन के साथ तनातनी ने बढ़ाई नजदीकी

भारत की सेमीकंडक्टर को लेकर सबसे बड़ी निर्भरता चीन पर है और पिछले कुछ साल से सीमा पर तनातनी बढ़ने के बाद से ही सरकार विकल्प की तलाश में थी। इस बीच, ताइवान के साथ चीन की खींचतान बढ़ने पर दोनों देशों में नजदीकियां बढ़ीं और द्विपक्षीय करार पर सहमत हुए। ताइवान चाहता है कि इस द्विपक्षीय निवेश पर जल्द आगे बढ़ा जाए। साथ ही सेमीकंडक्टर निर्माण में इस्तेमाल होने वाले उपकरणों पर आयात शुल्क व टैक्स में राहत और प्रोत्साहन भी दिया जाए।

अभी पूरी तरह आयात पर निर्भर है भारत

सेमीकंडक्टर के लिए भारत अभी पूरी तरह आयात पर निर्भर है। यही कारण है कि गूगल के साथ मिलकर सस्ता स्मार्टफोन लाने की रिलायंस इंडस्ट्रीज की योजना में भी देरी हो रही है। भारत में जिस तरह ई-वाहन का चलन बढ़ रहा और वाहनों को हाईटेक बनाने के लिए सेमीकंडक्टर का इस्तेमाल हो रहा है, 2025 तक कुल आयात बढ़कर 100 अरब डॉलर पहुंचने का अनुमान है। अभी सालाना 24 अरब डॉलर के सेमीकंडक्टर का आयात होता है।